नईदुनिया

खाद्य पदार्थों में कीटनाशक का इस्तेमाल रोकने में एफएसएसएआई विफल, अपील पर केंद्र को नोटिस जारी

नई दिल्ली ।
सुप्रीम कोर्ट ने खाद्य फसलों और खाद्य पदार्थों पर कीटनाशकों और अन्य रासायनिक पदार्थों के उपयोग पर चिंता व्यक्त करने वाली याचिका पर केंद्र और भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) से जवाब मांगा है।

प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने इस संबंध में पर्यावरण, वन व जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय, कृषि मंत्रालय और एफएसएसएआई को नोटिस जारी किया।

शीर्ष अदालत पर्यावरणविद् और वकील आकाश वशिष्ठ द्वारा दायर एक याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें कहा गया था कि कीटनाशक युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन देश भर में कैंसर और अन्य घातक बीमारियों का प्राथमिक कारण बन गया है।

याचिका में कहा गया है कि खाद्य फसलों और खाद्य पदार्थों पर कीटनाशकों और अन्य रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग/अति उपयोग, कृत्रिम रंग, दालों, खाद्यान्न और अन्य वस्तुओं की कोटिंग और वैक्सिंग के कारण देश भर में बड़ी संख्या में मौतें हो रही हैं।

याचिका में कहा गया है कि कीटनाशक युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन देश भर में कैंसर और अन्य घातक बीमारियों का प्राथमिक और प्रमुख कारण बन गया है। याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अनीता शेनॉय ने शीर्ष अदालत से कहा कि याचिकाकर्ता ने देशभर से आंकड़े एकत्र किए हैं जो कीटनाशकों के कारण होने वाली मौतों की बहुत बड़ी संख्या दिखाते हैं। उन्होंने कहा, कीटनाशकों पर अंकुश लगाने और उन्हें नियंत्रित करने तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में एफएसएसएआई पूरी तरह विफल रहा है। शेनॉय ने शीर्ष अदालत को बताया, कीटनाशकों और कैंसर के बीच सीधा वैज्ञानिक और चिकित्सकीय संबंध है और ऐसे मामले देश भर में बढ़ रहे हैं।

न्यूज ब्रीफ

देश के विदेशी मुद्रा भंडार को लेकर खुशखबरी, 2.56 अरब डॉलर की हुई बढ़ोतरी

नई दिल्ली । इस समय विदेशी मुद्रा भंडार के मोर्चे पर भारत को खुशखबरी मिल रही है। बीते 10 मई को समाप्त सप्ताह के दौरान भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 2.561 अरब डॉलर की शानदार बढ़ोतरी हुई। अब अपना भंडार 644.15 अरब डॉलर का हो गया है। विदेशी मुद्रा भंडार में काफी बढ़ोतरी भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की ओर से जारी नवीनतम आंकड़ों से पता चलता है कि 10 मई को समाप्त सप्ताह में भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में काफी बढ़ोतरी हुई है। इस दौरान भंडार 2.561 अरब डॉलर से बढ़कर 644.151 अरब डॉलर तक पहुंच गया। इससे पिछले सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 3.67 अरब डॉलर बढ़कर 641.59 अरब डॉलर रहा था। इसके पहले लगातार तीन सप्ताह इसमें गिरावट आई थी। पांच अप्रैल को समाप्त सप्ताह में देश का मुद्रा भंडार 648.56 अरब डॉलर के नये सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था। वहीं, केंद्रीय बैंक के साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान विदेशी पूंजी भंडार का सबसे बड़ा घटक विदेशी मुद्रा भंडार 1.488 अरब डॉलर से बढ़कर 565.648 अरब डॉलर हो गया। स्वर्ण आरक्षित भंडार का मूल्य 1.07 अरब डॉलर बढ़ा रिजर्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक, 10 मई को समाप्त सप्ताह में मुद्रा भंडार का अहम हिस्सा मानी जाने वाली विदेशी मुद्रा भंडार 1.49 अरब डॉलर बढ़कर 565.65 अरब डॉलर हो गया। रिजर्व बैंक ने कहा कि समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान स्वर्ण आरक्षित भंडार का मूल्य 1.07 अरब डॉलर बढ़कर 55.95 अरब डॉलर हो गया। आईएमएफ के पास भारत का आरक्षित जमा घटा विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 50 लाख डॉलर बढ़कर 18.06 अरब डॉलर हो गया। रिजर्व बैंक के मुताबिक समीक्षाधीन सप्ताह में अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) के पास भारत का आरक्षित जमा 40 लाख डॉलर घटकर 4.495 अरब डॉलर रह गया। पाकिस्तान में बढ़ गया डॉलर का भंडार वहीं, अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान में इस समय विदेशी मुद्रा की भले ही जबरदस्त किल्लत चल रही हो, लेकिन पिछले तीन सप्ताह से वहां बहार है। बीते 26 अप्रैल को समाप्त सप्ताह के दौरान वहां के विदेशी मुद्रा भंडार 35.5 मिलियन डॉलर की बढ़ोतरी हुई है। उसके बाद फिर तीन मई को समाप्त सप्ताह के दौरान भी यह बढ़ा। बीते 10 मई को समाप्त सप्ताह के दौरान भी यह 17.75 मिलियन डॉलर बढ़ गया। इस सप्ताह बढ़ोतरी के बाद अब वहां 14.626 अरब डॉलर का विदेशी मुद्रा भंडार हो गया है।

माइकल डेल दुनिया के अमीरों की सूची में 11वें नंबर पर, मुकेश अंबानी एक पायदान नीचे खिसक कर 12वें नंबर पर

मुंबई । भारत और एशिया के सबसे बड़े रईस मुकेश अंबानी हाल में दुनिया के अमीरों की सूची में एक पायदान नीचे खिसक गए। उनसे आगे निकलने वाले माइकल डेल अमेरिका के अरबपति डेल कंप्यूटर प्रॉडक्ट्स बनाने वाली कंपनी डेल टेक्नोलॉजीज के फाउंडर और सीईओ हैं। इस कंपनी में उनकी आधी हिस्सेदारी है। ब्लूमबर्ग बिलिनेयर इंडेक्स के मुताबिक डेल की नेटवर्थ 113 अरब डॉलर है। इस साल उनकी नेटवर्थ में 34.1 अरब डॉलर की तेजी आई है। वह दुनिया के अमीरों की सूची में 11वें नंबर पर हैं जबकि भारत की रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी उनसे एक स्थान नीचे 12वें नंबर पर हैं। अंबानी की नेटवर्थ 110 अरब डॉलर है। बताया जाता है कि 1965 में ह्यूस्टन में जन्मे डेल का सपना डॉक्टर बनने का था। उन्होंने साल 1983 में ऑस्टिन में यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सस में एडमिशन लिया। लेकिन जल्दी ही इससे उनका मन ऊब गया। उन्होंने 1,000 डॉलर से अपना स्टार्टअप शुरू किया। डेल अपने हॉस्टल रूम में ही कंप्यूटर एसेंबल करने लगे। इस तरह उन्होंने अपग्रेडेड पर्सनल कंप्यूटर और कंपोनेंट्स बेचने का काम शुरू किया। 1984 में उन्होंने कंपनी का नाम डेल कंप्यूटर रखा और कॉलेज छोड़ दिया। साल 1988 में वह आईपीओ लेकर आई और इस तरह नैसडैक पर डेल के शेयरों की खरीद-फरोख्त शुरू हो गई। आठ साल बाद कंपनी में उनकी हिस्सेदारी की वैल्यू एक अरब डॉलर से अधिक पहुंच गई। 1998 में उन्होंने अपनी निवेश कंपनी एमएसडी कैपिटल बनाई। डेल ने साल 2004 में सीईओ पद छोड़ दिया था लेकिन तीन साल बाद फिर वह इस पद पर लौटे। असल में उनके पद छोड़ने के बाद कंपनी की बिक्री में काफी गिरावट आई। साथ ही अकाउंटिंग का एक घोटाला भी सामने आया। इसके मद्देनजर बोर्ड ने डेल से फिर से सीईओ बनने का अनुरोध किया। इसके बाद उन्होंने कंपनी के कारोबार को फैलाया। पीसी और लैपटॉप के साथ-साथ कंपनी सर्वर, कंप्यूटर स्टोरेज और नेटवर्किंग प्रॉडक्ट्स भी बेचने लगी। 2013 में उन्होंने कंपनी को प्राइवेट कर दिया।

वैश्विक रुख, कंपनियों के तिमाही नतीजों से तय होगी शेयर बाजार की दिशा

निवेशकों की निगाह रुपये-डॉलर के रुख और वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों पर भी रहेगी

मुंबई ।
बाजार के विश्लेषकों का कहना है कि कंपनियों के तिमाही नतीजे, वैश्विक रुझान और विदेशी निवेशकों की कारोबारी गतिविधियां इस सप्ताह शेयर बाजार का रुख तय करेंगी। यह सप्ताह कम कारोबारी सत्रों का होगा। विश्लेषकों का मानना है कि मौजूदा आम चुनाव की वजह से निवेशक अभी सतर्क रुख अपना सकते हैं। मुंबई में लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण के मतदान के कारण शेयर बाजार बंद रहेंगे।

बाजार के जानकारों ने कहा कि चौथी तिमाही के नतीजों का सीजन समाप्त होने वाला है। कंपनियों के बेहतर नतीजे असमंजस में फंसे बाजार को कुछ राहत प्रदान कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व के प्रमुख जेरोम पावेल का संबोधन है।

इससे बाजार की धारणा प्रभावित हो सकती है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा जापान और अमेरिका के आर्थिक आंकड़े तथा वैश्विक मुद्रा बाजार में उतार-चढ़ाव बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण होंगे। सप्ताह के दौरान ओएनजीसी, सेल, बीएचईएल, जेके टायर, वन97 कम्युनिकेशंस, पावर ग्रिड, इंटरग्लोब एविएशन, आईटीसी और एनटीपीसी अपने तिमाही नतीजों की घोषणा करेंगी। बाजार विश्लेषकों ने कहा कि इस सप्ताह बाजार का परिदृश्य प्रमुख घरेलू और वैश्विक आर्थिक आंकड़ों से तय होगा।

भारत में पीएमआई विनिर्माण और सेवा क्षेत्र का आंकड़ा आना है।

इसके अलावा ब्रिटेन के मुद्रास्फीति, अमेरिका के बेरोजगारी दावे, एसएंडपी के वैश्विक सेवा और वैश्विक विनिर्माण आंकड़े आने हैं। साथ ही घरेलू मोर्चे पर कई बड़ी कंपनियों के तिमाही नतीजे घोषित किए जाएंगे।

इसके अलावा निवेशकों की निगाह रुपये-डॉलर के रुख और वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों पर रहेगी। उन्होंने कहा कि अगले कुछ सप्ताह में बाजार में उतार-चढ़ाव बढ़ सकता है। कुछ बड़ी, मझोली और छोटी कंपनियों के शेयरों में चुनिंदा लिवाली जारी रहेगी। चुनावी नतीजों और तिमाही आय को लेकर अनिश्चितताओं के बीच निकट भविष्य में बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहने की संभावना है। पिछले सप्ताह बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 1252.56 अंक अर्थात 1.7 प्रतिशत की छलांग लगाकर सप्ताहांत पर 73917.03 अंक पर पहुंच गया।

इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 410.9 अंक यानी 1.9 प्रतिशत उछलकर 22466.10 अंक पर रहा। समीक्षाधीन सप्ताह में दिग्गज कंपनियों की तरह बीएसई की मझौली और छोटी कंपनियों में भी जमकर लिवाली हुई।

इससे मिडकैप 1813.35 अंक अर्थात 4.42 प्रतिशत मजबूत होकर सप्ताहांत पर 42841.10 अंक और स्मॉलकैप 2194.68 अंक यानी 4.6 प्रतिशत की तेजी के साथ 47591.67 अंक हो गया। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज और बीएसई ने प्राथमिक साइट पर प्रमुख व्यवधानों से निपटने के लिए अपनी तैयारियों की जांच करने को 18 मई को इक्विटी और इक्विटी डेरिवेटिव खंड में एक विशेष कारोबारी सत्र का आयोजन किया।

दिल्ली-मुंबई और बंगलूरू में क्या है सुंदर पिचई का पसंदीदा खाना, गूगल सीईओ ने खास अंदाज में बताया

मुंबई । गूगल के सीईओ सुंदर पिचई ने एओस कंपनी के संस्थापक वरुण मैया के साथ एक साक्षात्कार में अपने निजी जीवन की एक झलक पेश की। इस साक्षात्कार में उन्होंने अपने पसंदीदा भारतीय व्यंजन का भी खुलासा किया। उनसे (पिचई) जब उनके पसंदीदा भारतीय भोजन के बारे में पूछा गया, तब उन्होंने बड़े ही खास अंदाज में भारत के तीन मेट्रो सिटी दिल्ली, मुंबई और बंगलूरू से एक-एक व्यंजन का नाम बताया। सुंदर पिचई ने बताया अपना पसंदीदा खाना सुंदर पिचई ने बताया कि जब वह बंगलूरू में होते हैं तो उन्हें डोसा खाना बहुत पसंद है। दिल्ली में उन्हें छोले भटूरे खाना पसंद है और मुंबई में उनका पसंदीदा व्यंजन पाव-भाजी है। उन्होंने कहा, जब यह बंगलूरू होगा, तो मुझे यहां डोसा मिलेगा। यह मेरा पसंदीदा व्यंजन है। अगर यह दिल्ली है तो मुझे यहां के छोले बटूरे पसंद है। मुंबई में मैं पाव-भाजी के साथ जाना चाहूंगा। 3-इडियट्स का भी किया जिक्र इस साक्षात्कार में बॉलीवुड की फिल्म 3-इडियट्स पर भी बात की गई। सुंदर पिचई ने बताया कि असली सफलता चीजों की गहरी समझ रखने में होती है। इसे समझाने के लिए उन्होंने फिल्म के मोटरसाइकिल दृश्य का संदर्भ दिया। प्रतिस्पर्धी परीक्षा मानसिकता को लेकर पूछे गए सवाल पर पिचई ने कहा, मुझे लगता है कि असली सफलता चीजों को गहराई तक समझने से मिलती है। उन्होंने यह विशेष रूप से एफएएएनजी के आवेदकों के लिए कहा। बता दें कि एफएएएनजी अमेरिकी तकनीक दिग्गजों का एक संक्षिप्त शब्द है।

कामत ने चुनौतियों का सामना कर खड़ी की 400 करोड़ की कंपनी

जुहू में एक छोटी सी दुकान से शुरु किया था कारोबार

मुंबई ।
नैचुरल्स आइसक्रीम के संस्थापक रघुनंदन श्रीनिवास कामत का पिछले दिनों 17 मई को 70 साल की आयु में निधन हो गया। उन्होंने मुंबई के एक अस्पताल में अपनी आखिरी सांसें ली। उनकी पत्नी और 2 बेटे हैं। कर्नाटक के मंगलुरु इलाके से आने वाले कामत ने कई चुनौतियों का सामना करते हुए देश को नैचुरल्स आइसक्रीम जैसा ब्रांड खड़ा किया। खबरों के अनुसार आज उनका बिजनेस 400 करोड़ रुपये का है। कामत के 6 भाई बहन थे। उनके पिता एक फरूट ट्रेडर थे। उन्होंने बचपन से ही अपने पिता के काम में हाथ बंटाया। इससे उन्हें फलों के बारे में काफी जानकारी प्राप्त हुई। वह 14 साल की उम्र में अपने गांव से निकलकर मुंबई आ गए। यहां उन्होंने अपने भाई के छोटे से रेस्टोरेंट में काम शुरू किया। रघुनंदन ने शुरुआत में 12 आइसक्रीम के फ्लेवर बेचना शुरू किए। उन्होंने अपनी आइसक्रीम लोगों के बीच पहुंचाने के लिए एक स्ट्रेटजी का इस्तेमाल किया। उन्होंने मेन कोर्स पाव भाजी के साथ कॉम्प्लीमेंट्री डेजर्ट (मीठा) में आइसक्रीम देना शुरू किया। उनका आइडिया हिट रहा। लोगों को आइसक्रीम पसंद आने लगी। वह जुहू में एक छोटी सी दुकान चला रहे थे। इस दुकान ने पहले साल में 5 लाख रुपये की सेल की। इसमें आइसक्रीम का योगदान बड़ा रहा। इसके बाद रघुनंदन ने अपना पूरा फोकस की आइसक्रीम पर शिफ्ट कर दिया। उन्होंने आइसक्रीम की क्वालिटी को और बेहतर बनाने के लिए कुछ बदलाव किए। धीरे-धीरे नैचुरल्स एक स्टोर से बढ़ते हुए 2020 तक देशभर में 135 लोकेशन पर फैल गया। बिना किसी प्रेजरवेटिव व नैचुरल फ्लेवर्स से तैयार आइसक्रीम ने बड़ी-बड़ी कंपनियों को आइना दिखाना शुरू कर दिया। वित्त वर्ष 2020 में कंपनी का रेवेन्यू 400 करोड़ रुपये पार कर गया।

भारत का योगदान ग्लोबल जीडीपी में 30 फीसदी होगाः नीति आयोग के पूर्व सीईओ

नई दिल्ली ।
जी-20 शेरपा और नीति आयोग के पूर्व सीईओ अमिताभ कांत ने कहा कि 2035-2040 के बीच वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में भारत का योगदान 30 प्रतिशत तक होने की संभावना है। नई दिल्ली में आयोजित एक बिजनेस समिट में कांत ने कहा कि ढांचागत सुधारों ने देश को कमजोर 5 से शीर्ष 5 में पहुंचा दिया है। उन्होंने कहा कि क्षेत्रों में हुए भारी सुधारों के कारण पिछली तीन तिमाहियों में लगभग 8.4 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है। कांत ने वैश्वीकरण का भविष्य: भारतीय उद्योग के लिए चुनौतियां विषय पर अपने संबोधन में कहा, 2027 तक हम जर्मनी और जापान से आगे निकल जाएंगे। विश्लेषकों का यह कहना सही है कि 2035-2040 के बीच वैश्विक जीडीपी वृद्धि में भारत का योगादान 30 प्रतिशत तक हो जाएगा। कांत ने विकास में तेजी लाने के लिए भारतीय उद्योग जगत से राज्यों के साथ तालमेल बनाकर काम करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि ऐसा कर 12-13 राज्य प्रति वर्ष 10-11 प्रतिशत की दर से विकास कर सकते हैं। गौरतलब है कि हाल ही में

एसएंडपी की ग्लोबल रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन जाएगा। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि अगले तीन वर्षों में दुनिया में भारत की अर्थव्यवस्था सबसे तेज गति से बढ़ेगी। संयुक्त राष्ट्र ने भी 2024 के लिए भारत के विकास पूर्वानुमान को 6.9 प्रतिशत कर दिया है। इसके पहले जनवरी में 6.2 प्रतिशत का अनुमान लगाया गया था। अभी भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी इकॉनमी है। उससे आगे अमेरिका, चीन, जर्मनी और जापान है। माना जा रहा है कि 2030 तक जापान और जर्मनी से भारत आगे निकल जाएगा।

इस सरकारी बैंक की ग्रोथ ने सबको किया हैरान एसबीआई और केनरा बैंक जैसे दिग्गजों को छोड़ा पीछे

नई दिल्ली ।
वर्ष 2023-24 में ज्यादातर सरकारी बैंक डबल-डिजिट ग्रोथ हासिल करने के लिए जूझ रहे थे। लेकिन, एक बैंक की बिजनेस ग्रोथ ने सबको हैरान किया। दरअसल, बैंक ऑफ महाराष्ट्र ने टोटल बिजनेस और डिपॉजिट जुटाने के मामले में पब्लिक सेक्टर के सभी बड़े बैंकों को पीछे छोड़ दिया। पुणे मुख्यालय वाले बैंक ऑफ महाराष्ट्र ने पिछले वित्त वर्ष में टोटल डोमेस्टिक बिजनेस में 15.94 फीसदी का उछाल दर्ज किया। वहीं, सरकारी क्षेत्र का सबसे बड़ा लेंडर- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया 13.12 फीसदी की ग्रोथ के साथ दूसरे नंबर पर रहा। यह जानकारी पब्लिक सेक्टर के बैंकों के वित्तीय आंकड़ों से मिली है।

टोटल बिजनेस में एसबीआई अव्वल - एसबीआई का टोटल बिजनेस यानी डिपॉजिट और एडवांस को मिलाकर 79,52,784 करोड़ रुपये रहा। यह बैंक ऑफ महाराष्ट्र के मुकाबले 16.7 फीसदी अधिक है। लेकिन, बैंक ऑफ महाराष्ट्र ने जमा जुटाने में 15.66 प्रतिशत की ग्रोथ के साथ

अपना शीर्ष स्थान बनाए रखा। इसके बाद एसबीआई (11.07 प्रतिशत), बैंक ऑफ इंडिया (11.05 प्रतिशत) और केनरा बैंक (10.98 प्रतिशत) का नंबर रहा। देश में कुल 12 सरकारी बैंक हैं। इनमें सिर्फ यही चार बैंक वित्त वर्ष 2023-24 में जमा में दोहरे अंक की वृद्धि दर्ज कर सके। बैंक ऑफ महाराष्ट्र कम लागत वाले (करेंट अकाउंट सेविंग अकाउंट) डिपॉजिट के मामले में 52.73 प्रतिशत की ग्रोथ के साथ शीर्ष पर रहा। इसके बाद 50.02 प्रतिशत की वृद्धि के साथ सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया रहा। चालू खाते और बचत खातों का उच्च स्तर बैंकों को धन की लागत कम रखने में मदद करता है। अगर लोन ग्रोथ की बात करें, तो कोलकाता स्थित यूको बैंक 16.38 प्रतिशत पर थोड़ा आगे रहा। यहां बैंक ऑफ महाराष्ट्र 16.30 प्रतिशत के साथ पर था। वहीं, एसबीआई ने वित्त वर्ष 24 में 16.26 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। वित्त वर्ष के दौरान बाकी सरकारी बैंक की लोन ग्रोथ 16 प्रतिशत से कम रही। एनपीए में भी शानदार रिकॉर्ड एसेट क्वालिटी के मामले में भी बैंक ऑफ महाराष्ट्र और एसबीआई का प्रदर्शन सबसे अच्छा रहा। पिछले वित्त वर्ष की समाप्ति यानी 31 मार्च, 2024 तक इनका ग्रॉस नॉन-परफॉर्मिंग एसेट क्रमशः 1.88 प्रतिशत और 2.24 प्रतिशत के साथ सबसे कम रहा। वहीं, नेट एनपीए की बात करें, तो यहां बैंक ऑफ महाराष्ट्र (0.2 प्रतिशत) के साथ इंडियन बैंक (0.43 प्रतिशत) अव्वल रहा। पूंजी पर्याप्तता अनुपात में भी बैंक ऑफ महाराष्ट्र 17.38 प्रतिशत के साथ सबसे आगे था। इसके बाद इंडियन ओवरसीज बैंक 17.28 प्रतिशत के साथ दूसरे और पंजाब एंड सिंध बैंक 17.16 प्रतिशत के साथ तीसरे नंबर पर रहा।

कपास की कीमतों में गिरावट का दौर जारी, भाव बढ़ने की आस में किसान बेचने से कर रहे परहेज

मुंबई ।
दो महीने से कपास की कीमतों में गिरावट का दौर जारी है। दूसरी ओर, किसानों को ऐसा लग रहा है कि इस वर्ष कम उत्पादन के कारण कपास की कीमतों तेजी अवश्य आएगी। किसानों के इसी अनुमान की वजह से मौजूदा समय में मंडियों में कपास की आवक भी घट रही है।

कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सीएआई) के आंकड़ों के अनुसार कॉटन (कपास शंकर 6) की कीमतों में पिछले दो महीनों से लगभग 8 प्रतिशत की गिरावट आई है। कपास की कीमतें गिरकर 16,057 रुपये प्रति क्विंटल हो गई हैं। जबकि दो महीने पहले 15 मार्च 2024 को इसी कपास के लिए 17,434 रुपये प्रति क्विंटल की बोली लग रही थी। वहीं, एक साल पहले शंकर 6 किस्म के कपास का भाव 16,759 रुपये प्रति क्विंटल था।

जानकारों के अनुसार यदि कपास के भाव में गिरावट इसी तरह जारी रही तो इससे किसानों को मुश्किल हो सकती है। चाहे वे इसे स्टोर करें या बेच दें पर उनको परेशानी झेलनी पड़ सकती है। महाराष्ट्र की अधिकतर मंडियों में कपास का भाव न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से ज्यादा है उसके बावजूद किसान और अधिक दाम मिलने

की आस में बैठे हैं। इससे मंडियों में कपास की आवक घट रही है।

कॉटन एसोसिएशन के नए अनुमान के मुताबिक अक्टूबर-मार्च के दौरान कॉटन निर्यात 137 प्रतिशत बढ़कर 18 लाख गांठ पहुंच गया था। जबकि पिछले साल की समान अवधि में निर्यात 7.59 लाख गांठ का रहा था। सीएआई के नए अनुमान के अनुसार आने वाले समय में कपास की आवक में और कमी रहने की आशंका है क्योंकि साल 2023-24 में 323.1 लाख गांठ के उत्पादन में से लगभग 280.6 लाख गांठ की आवक हो चुकी है।

वायदा बाजार में भी कॉटन के भाव में कोई बड़ा बदलाव देखने को नहीं मिल रहा है। एसएमसी कमोडिटी रिसर्च के अनुसार फिलहाल एमसीएक्स पर कपास 56,000-57,500 प्रति कैंडी (355 किलोग्राम की एक कैंडी होती है) के भाव कारोबार करता दिख रहा है। दूसरी ओर, कॉटन (अप्रैल 2025) वायदा की कीमतें 1,530-1,580 के दायरे में कारोबार रहने की आशंका है।

महाराष्ट्र की मंडियों में कॉटन के भाव में लगातार गिरावट जारी है। हालांकि इस साल कपास के कम उत्पादन के अनुमान को देखते हुए अनुमान लगाया जा रहा है कि इसकी कीमतें 2021 और 2022 की तरह 9,000 से 12,000 रुपये प्रति क्विंटल तक जा सकती हैं।

कपास की कीमतों पर क्या है वैश्विक अनुमान

एक अगस्त से शुरू होने वाले 2024-25 सीजन में ब्राजील और तुर्की के साथ अमेरिका में कॉटन की फसल अधिक होने की उम्मीद से वैश्विक कॉटन की कीमते घट रही हैं। फिच सॉल्यूशन रिसर्च एजेंसी बीएमआई का कहना है कि वैश्विक कॉटन बाजार में मंदी की भावना काफी हद तक 2024-25 में उत्पादन में सुधार विशेषकर अमेरिका में अधिक उत्पादन की उम्मीद के कारण है।

वहीं, अमेरिकी कृषि विभाग यूएसडीए के अनुसार 2024-25 सीजन में अमेरिका में कॉटन का उत्पादन बढ़कर 160 लाख गांठ (204.9 गांठ 170) किलोग्राम होने का अनुमान है। अगले सीजन में वैश्विक उत्पाद 11.90 करोड़ अमेरिकी गांठ (217.72 किलोग्राम) होने का अनुमान है।

यूएसडीए को उम्मीद है कि अमेरिका, ब्राजील और तुर्की में कपास की अच्छी फसल चीन और भारत में कम फसल की भरपाई कर देगी। अमेरिका में अच्छी फसल के कारण इस साल फरवरी से कपास की कीमंते घट रही हैं। इस वजह से भारत में भी कपास की कीमतों पर असर पड़ा है। ऑल इंडिया कॉटन ब्रोकर एसोसिएशन के उपाध्यक्ष रामानुज दास का कहना है कि भाव 57,500 से 59,000 प्रति कैंडी की रेंज में स्थिर रह सकता है।

मेसर्स दैनिक नईदुनिया के लिए प्रकाशक अपूर्व तिवारी के द्वारा 2, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल- 462011 से प्रकाशित एवं मुद्रक डॉ. विश्वास तिवारी के द्वारा नईदुनिया प. प्रा.लि., 2, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल-462011 से मुद्रित। प्रबंध संपादक: डॉ. सुरेन्द्र तिवारी एवं संपादक: अपूर्व तिवारी। *
फोन-0755-2550900-01,-03, फैक्स नं.- 0755-2553914 e-mail : naidunia@gmail.com (* समाचार पत्र से संबंधित सभी प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र सिर्फ भोपाल होगा।) रजिस्टर्ड नं.म.प्र./296/भोपाल/2012-2014 आर.एन.आई. रजि. क्र. 47694/88, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/296/2015-2017